Tender Heart High School, Sector 33-B, Chandigarh
Date - Class- VI
Subject - Hindi Literature
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

पुस्तक - नवतरंग भाग- 6
पाठ - 3. 'मेरे स्कूल के दिन'
लेखक - महात्मा गाँधी

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

यह पाठ - 3 'मेरे स्कूल के दिन' कक्षा छठी की हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तक नवतरंग भाग- 6 की पृष्ठ संख्या - 19 में दिया गया है। यह पाठ आपको 2 मई, 2022 को भेजा जाएगा।

प्यारे बच्चो ! आज हम पाठ - 3 'मेरे स्कूल के दिन' पढ़ेंगे। इसलिए सभी बच्चे अपनी हिन्दी की पुस्तक नवतरंग भाग- 6 का पृष्ठ - 19 निकाल लें और अपने पास हिन्दी की एक अभ्यास पुस्तिका भी रख लें क्योंकि मैं आपको पाठ के बीच में कुछ कार्य लिखने के लिए भी दूँगी। यदि आप तैयार हैं तो मैं आपको पाठ 'मेरे स्कूल के दिन' समझाने जा रही हूँ। सभी बच्चे इसे ध्यानपूर्वक सुनेंगे एवं समझेंगे।

बच्चो ! पाठ आरंभ करने से पहले मैं आपको इस पाठ के बारे में संक्षेप में समझाने जा रही हूँ। यह पाठ 'मेरे स्कूल के दिन' महात्मा गाँधी जी द्वारा लिखा गया है। इसमें उन्होंने अपनी हाईस्कूल के दिनों के बारे में बताया है। बच्चो महात्मा गाँधी जी अपनी कक्षा के एक अच्छे विद्यार्थी थे। वे भाषा ज्ञान और सुंदर लेखन को जीवन में अनिवार्य मानते थे।

_/_/_

Date-
Class- VI
Subject - Hindi Literature
Page - 2
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

बच्चो ! अब मैं आपको पाठ पढ़कर सुनाऊँगी एवं समझाऊँगी। सभी बच्चे इसे अपनी-अपनी पुस्तक में से देखकर मेरे साथ-साथ पढ़ेंगे।

हाईस्कूल में मेरी गिनती मंदबुद्धि विद्यार्थियों में नहीं थी। शिक्षकों का प्रेम मैं हमेशा ही पा सका था। हर साल माता-पिता के नाम स्कूल में विद्यार्थी की पढ़ाई और उसके आचरण के संबंध में प्रमाणपत्र भेजे जाते थे। उनमें मेरे आचरण या अभ्यास के खराब होने की **टीका** कभी नहीं हुई। दूसरी कक्षा के बाद मुझे इनाम भी मिले और पाँचवीं तथा छठी कक्षा में क्रमशः प्रतिमास चार और दस रुपयों की छात्रवृत्ति भी मिली थी। इसमें मेरी होशियारी की अपेक्षा भाग्य का **अंश** अधिक था। ये छात्रवृत्तियाँ सब विद्यार्थियों के लिए नहीं थी, बल्कि सोरठवासियों में से सर्वप्रथम आनेवालों के लिए थी। चालीस-पचास विद्यार्थियों की कक्षा में उस समय सोरठ प्रदेश के विद्यार्थी कितने हो सकते थे?

मेरा अपना ख्याल है कि मुझे अपनी होशियारी का कोई गर्व नहीं था। पुरस्कार या छात्रवृत्ति मिलने पर मुझे आश्चर्य होता था। पर अपने आचरण के विषय में मैं बहुत **सजग** था। आचरण में दोष आने पर मुझे रुलाई आ ही जाती थी। मेरे हाथों कोई भी ऐसा काम बने, जिससे शिक्षक को मुझे डाँटना पड़े तो वह मेरे लिए **असह्य** हो जाता था। मुझे याद है कि एक बार मुझे मार खानी पड़ी थी। मार का दुख नहीं था, पर मैं दंड का पात्र माना गया, इसका मुझे बड़ा दुख रहा। मैं खूब रोया। यह प्रसंग पहली या दूसरी कक्षा का है। दूसरा एक प्रसंग सातवीं कक्षा का है। उस समय दोराबजी एदलजी गीमी हेड-मास्टर थे। वे विद्यार्थी प्रेमी थे, क्योंकि वे नियमों का पालन करवाते थे, व्यवस्थित रीति से काम लेते और अच्छी तरह पढ़ाते थे। उन्होंने उच्च कक्षा के विद्यार्थियों के लिए कसरत-क्रिकेट अनिवार्य कर दिए थे। मुझे इनसे अरुचि थी। इनके अनिवार्य बनने से पहले मैं कभी कसरत, क्रिकेट या फुटबाल में गया ही न था। न जाने का मेरा शरमीला स्वभाव ही एकमात्र कारण था। अब मैं देखता हूँ कि वह अरुचि मेरी भूल थी। उस समय मेरा यह गलत ख्याल बना रहा कि शिक्षा के साथ कसरत का कोई संबंध नहीं है। बाद में मैं समझा कि विद्याभ्यास में व्यायाम का, अर्थात् शारीरिक शिक्षा का, मानसिक शिक्षा के समान ही स्थान होना चाहिए।

बातचीत के लिए

गांधी जी को ही छात्रवृत्ति क्यों मिलती थी?

स्कूल से किस संबंध में प्रमाण-पत्र घर भेजे जाते थे?

Date - Class- VI
Subject - Hindi Literature Page - 3
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

बच्चो ! यहाँ तक के पाठ में हमने पढ़ा कि गाँधी जी अपनी कक्षा के एक होनहार विद्यार्थी थे। दूसरी कक्षा के बाद उन्हें इनाम भी मिले, पाँचवी तथा छठी कक्षा में उन्हें चार और दस रुपयों की छात्रवृत्ति भी मिली थी। गाँधी जी सोरठ प्रदेश के रहने वाले थे। इसलिए भी उन्हें छात्रवृत्ति मिलती थी।

बच्चो सोरठ प्रदेश अर्थात् सूरत शहर के आसपास का इलाका था।

गाँधी जी अपने आचरण के विषय में बहुत सुचेत रहते थे। यदि उन्हें कक्षा में कभी डांट दिया जाता तो उन्हें बहुत दुख होता। गाँधी जी बहुत शर्मीले स्वभाव के विद्यार्थी थे। उन्हें कसरत और क्रिकेट जैसे विषयों में असचि थी। उन्होंने बाद में इस बात को समझा भी कि विद्याभ्यास में व्यायाम का, अर्थात् शारीरिक शिक्षा का, मानसिक शिक्षा के समान ही स्थान होना चाहिए।

बच्चो ! मैंने आपको यहाँ तक पाठ समझा दिया है। अब मैं आपसे इसके आधार पर कुछ प्रश्न पूछूँगी। अब आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे और इन प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखेंगे।

प्रश्न-1. गाँधी जी को पाँचवीं कक्षा में कितनी छात्रवृत्ति मिलती थी ?

प्रश्न-2. सातवीं कक्षा में गाँधी जी के हेड-मास्टर का क्या नाम था ?

प्रश्न-3. गाँधी जी का स्वभाव कैसा था ?

प्रश्न-4. गाँधी जी को कौन से विषयों में असचि थी ?

बच्चो ! अब आपका अंतराल का समय समाप्त

Date- Class - VI

Subject- Hindi Literature Page- 4

Subject Teacher- Ms. Roma Rani

हो गया है। अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर-1. गाँधी जी को प्रतिमास चार रुपए छात्रवृत्ति मिलती थी।

उत्तर-2. दोराबजी एदलजी गीमी

उत्तर-3. गाँधी जी का स्वभाव शर्मीला था।

उत्तर-4. गाँधी जी को कसरत और क्रिकेट मे अरुचि थी।

बच्चो! अब मैं आपको आगे पाठ पढ़कर सुनाऊँगी एवं समझाऊँगी, सभी बच्चे इसे अपनी-अपनी पुस्तक में से देखकर मेरे साथ-साथ पढ़ेंगे।

फिर भी मुझे कहना चाहिए कि कसरत में न जाने से मुझे नुकसान नहीं हुआ। उसका कारण यह रहा कि मैंने पुस्तकों में खुली हवा में घूमने जाने की सलाह पढ़ी थी और वह मुझे रुचि थी। इसके कारण हाईस्कूल की उच्च कक्षा से ही मुझे हवाखोरी की आदत पड़ गयी थी। वह अंत तक बनी रही। टहलना भी व्यायाम ही तो है, इससे मेरा शरीर अपेक्षाकृत सुगठित बना।

अरुचि का दूसरा कारण था, पिताजी की सेवा करने की तीव्र इच्छा। स्कूल की छुट्टी होते ही मैं सीधा घर पहुँचता और सेवा में लग जाता। जब कसरत अनिवार्य हुई, तो इस सेवा में बाधा पड़ी। मैंने विनती की कि पिताजी की सेवा के लिए कसरत से छुट्टी दी जाए। गीमी साहब छुट्टी क्यों देने लगे? एक शनिवार के दिन सुबह का स्कूल था। शाम को चार बजे कसरत के लिए जाना था। मेरे पास घड़ी नहीं थी। बादलों से धोखा खा गया। जब पहुँचा तो सब जा चुके थे। दूसरे दिन गीमी साहब ने हाजिरी देखी, तो मैं गैर-हाजिर पाया गया। मुझसे कारण पूछा

__/__/____

Date- Class- VI
Subject - Hindi Literature Page - 5
Subject Teacher- Ms. Roma Rani

गया। मैंने सही-सही कारण बता दिया। उन्होंने उसे सच नहीं माना और मुझ पर एक या दो आने (ठीक रकम का स्मरण नहीं है) का जुर्माना किया। मुझे बहुत दुख हुआ। कैसे सिद्ध करूँ कि मैं झूठा नहीं हूँ। मन मसोसकर रह गया। रोया। समझा कि सच बोलने वालों को असावधान भी नहीं रहना चाहिए। अपनी पढ़ाई के समय में इस तरह की मेरी यह पहली और आखिरी असावधानी थी। मुझे धुंधली-सी याद है कि मैं आखिर यह जुर्माना माफ़ करा सका था।

मैंने कसरत से तो मुक्ति कर ही ली। पिताजी ने हेडमास्टर को पत्र लिखा कि स्कूल के बाद वे मेरी उपस्थिति का उपयोग अपनी सेवा के लिए करना चाहते हैं। इस कारण मुझे मुक्ति मिल गई।

व्यायाम के बदले मैंने टहलने का सिलसिला रखा, इसलिए शरीर को व्यायाम न देने की गलती के लिए तो शायद मुझे सज़ा नहीं भोगनी पड़ी, पर दूसरी गलती की सज़ा मैं आज तक भोग रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि पढ़ाई में सुंदर लेखन आवश्यक नहीं है, यह गलत ख्याल मुझे कैसे हो गया था। पर ठेठ विलायत जाने तक यह बना रहा। बाद में, और खास करके, जब मैंने वकीलों के तथा दक्षिण अफ्रीका में जन्मे और पढ़े-लिखे नवयुवकों के मोती के दानों जैसे अक्षर देखे तो मैं शरमाया और पछताया।

बातचीत के लिए

गांधी जी का शरीर सुगठित कैसे बना?
पिताजी ने प्रधानाध्यपक को चिट्ठी क्यों लिखी?

बच्चो! यहाँ तक के पाठ में हमने पढ़ा कि गाँधी जी की कसरत में अरुचि का एक कारण उनका अपने पिता जी के प्रति सेवा भाव था। एक बार जब वह अपने पिता जी की सेवा करते-करते कसरत करने के लिए समय पर न पहुँचे तो वीमी साहब ने उन्हें जुर्माना भी लगा दिया था। इसके बाद उन्होंने हेडमास्टर जी को पत्र लिखकर इससे मुक्ति भी पा ली थी। बच्चो! इस पाठ में गाँधी जी हमें समझा रहे हैं कि हमारी लिखाई सुंदर होनी चाहिए हमारे शिक्षित होने का पता तभी चलता है, जब हमारी लिखाई सुंदर होती है।

__/__/__

Date - Class- VI

Subject- Hindi Literature Page-6

Subject Teacher- Ms. Roma Rani

बच्चो ! गाँधी जी बताते हैं कि उन्हें अपनी बुरी लिखाई का पछतावा तब हुआ जब उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के लोगों की मोतियों जैसी लिखाई देखी। इस प्रकार बच्चो हमे सदैव सुंदर लिखाई मे लिखना चाहिए क्योंकि सुंदर लिखाई हमेशा आपके व्यक्तित्व को प्रभावित करती है।

बच्चो ! मैंने आपको यहाँ तक पाठ समझा दिया है। अब मैं आपको इसके आधार पर कुछ प्रश्न दूँगी। अब आप यहाँ तीन मिनट का अंतराल लेंगे और इन प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास पुस्तिका मे लिखेंगे।

प्रश्न-1. गाँधी जी कसरत करने क्यो नहीं जा पाते थे ?

प्रश्न-2. गाँधी जी के पिता जी ने हेडमास्टर जी से क्या कहा ?

प्रश्न-3. गाँधी जी वकालत पढ़ने कहाँ गए थे ?

बच्चो ! अब आपका अंतराल का समय समाप्त हो गया है। अब मैं आपको इन प्रश्नों के उत्तर बताऊँगी।

उत्तर-1. वह अपने पिता जी की सेवा करते थे।

उत्तर-2. गाँधी जी के पिता जी ने हेडमास्टर से कहा कि स्कूल के बाद वे मेरी उपस्थिति का उपयोग अपनी सेवा के लिए करना चाहते हैं।

उत्तर-3 गाँधी जी वकालत पढ़ने दक्षिण अफ्रीका गए थे।

बच्चो ! आज हम यहाँ तक ही पाठ पढेंगे। आशा है यह पाठ आपको अच्छे से समझ आ गया होगा। अब मैं आपको गृहकार्य दूँगी। जिसे सभी बच्चे सुंदर लिखाई मे अपनी व्याकरण की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

गृह कार्य :-

__/__/____

Date - Class - VI
Subject - Hindi Literature Page - 7
Subject Teacher - Ms. Roma Rani

- बच्चो ! आप इस पाठ के पृष्ठ - 23 पर आए शब्द-अर्थ अपनी हिन्दी की व्याकरण की उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।
- आप इस पाठ के विस्तार से के करने की कोशिश करेंगे।

धन्यवाद !

Last page.